शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक २८ : नई दिल्ली : १६-२२ अक्टूबर २०११

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ४६ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ४७, सर्व ६६ सानंद केलवा विराज रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यप्रवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। अक्टूबर महीने का यह सप्ताह प्रार्थनाओं और घोषणाओं के लिए दीर्घकाल तक लोगों की स्मृति में रहेगा। पूज्यप्रवर ने आगामी अनेक वर्षों के लिए काफी चतुर्मास और मर्यादा महोत्सव घोषित कर दिए हैं, किन्तु आगे के लिए आशान्वित सुदूर क्षेत्रों की प्रार्थनाओं का क्रम अभी भी जारी है।

एक नए इतिहास का सृजन : सन् २०१५ का चतुर्मास विराटनगर (नेपाल) घोषित

८ अक्टूबर। परम श्रद्धेय महातपस्वी शान्तिदूत आचार्यश्री महाश्रमण ने आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में नेपाल-वासियों की चिरप्रतीक्षित प्रार्थना को स्वीकार कर उद्घोषणा की--'परमपूज्य हृदय सम्राट भगवान महावीर को श्रद्धा के साथ वन्दन करता हूं। केलवा की भूमि में बैठा हुआ आचार्य भिक्षु को उनकी तपोभूमि में उन्हें वन्दन करता हूं। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ, जो मेरे दो महान गुरु थे और जिनके पास मैं रहा हूं, उन दोनों गुरुओं को श्रद्धा के साथ वन्दन करता हूं। साध्वीप्रमुखाजी का अभिवादन करता हूं। मंत्री मुनिश्री और रत्नाधिक सन्तों को वन्दन करता हूं। छोटे साधु-साध्वियों को भी निहार रहा हूं। इन सबके बाद मैं कहना चाहता हूं--**द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, शारीरिक स्वास्थ्य, हमारे संघ की स्थितियां, देश-काल आदि की स्थितियां--इन सबकी अनुकूलता रहती है तो सन् २०१५ का चतुर्मास विराटनगर, नेपाल में करने का भाव है।**'

परमपूज्य आचार्यवर की इस उद्घोषणा के साथ पूरा पण्डाल 'ऊं अर्हम्' और जयनिनाद से गुंजायमान हो उठा। एक नए इतिहास का सृजन हो गया। उल्लेखनीय है--तेरांथ धर्मसंघ के इतिहास में अब तक किसी भी आचार्य ने विदेश की धरती पर चतुर्मास नहीं किया है। यह पहला प्रसंग है जब किसी आचार्य ने विदेश में चतुर्मास की घोषणा की है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण केलवा में

समानता हो कथनी और करनी में

४ अक्टूबर। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि के पांचवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा 'अपरिग्रह की चेतना जागृत करने के लिए अहिंसा को पुष्ट करना आवश्यक है। हिंसा और परिग्रह का परस्पर गहरा संबंध है। गृहस्थ पूर्ण रूप से अपरिग्रही नहीं बन सकता, फिर भी उसे इच्छा परिमाण व्रत एवं भोगोपभोग की सीमा को अंगीकार करना चाहिए।' आचार्यवर ने आगे कहा--'व्यक्ति की कथनी और करनी में समानता होनी चाहिए। समानता होने से ही वाणी प्रभावी और सार्थक बनती है, इसलिए बोलने से पूर्व उसके परिणाम का चिंतन कर लेना चाहिए।' कार्यक्रम में मंत्रीमुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

अहिंसा है सार्वभौम धर्म

५ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अहिंसा सार्वभौम धर्म है। अतीत में जितने भी तीर्थंकर हुए हैं तथा होंगे, उन सबने इस बात को प्ररूपित किया है कि किसी भी प्राणी का प्राण वियोजन मत करो। आचार्य भिक्षु के सिद्धान्त का मुख्य आधार भी अहिंसा है। वे अपनी बात को दृष्टान्तों के आधार पर समझाते थे। अहिंसा ऐसा तत्त्व है जो हमारी आत्मा का कल्याण करता है।' कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरक वक्तव्य हुआ।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन

आज रात्रि में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में मुनिवृन्द और साध्वीवृन्द के अपने-अपने ग्रुपों में अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। परम पूज्यवर की पावन सन्निधि में मुनिवृन्द के 'अमृत वर्ग' और 'महोत्सव वर्ग' के बीच हुई इस प्रतियोगिता में अमृत वर्ग २-० से विजयी रहा। साध्वीप्रमुखाजी की सन्निधि में साध्वीवृन्द के दोनों वर्ग ड्रा की स्थिति में रहे। इस प्रतियोगिता में २४ संत और उपस्थित प्रायः सभी साध्वियां और समणियां संभागी बने। प्रतियोगिता बहुत रोचक और सरस रही। परमपूज्य आचार्यवर ने साधुओं के विजेता वर्ग और साध्वियों के दोनों वर्गों के प्रत्येक सदस्य को ग्यारह-ग्यारह कल्याणक और साधुओं के महोत्सव वर्ग के प्रत्येक सदस्य को नौ-नौ कल्याणक बख्शीश रूप में प्रदान किए।

इसिभासियाइं का लोकार्पण

६ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत समणी कुसुमप्रज्ञाजी द्वारा संपादित इसिभासियाइं ग्रंथ का लोकार्पण किया गया। इस कार्यक्रम हेतु विशेष रूप से समागत लालभाई दलपतभाई शोध संस्थान के निदेशक प्रो. जीतूभाई शाह एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री बी.सी.लोढ़ा ने ग्रंथ के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। ग्रंथ की संपादक समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त करते हुए ग्रंथ की प्रथम प्रति पूज्य आचार्यवर को उपहृत की। कार्यक्रम में विशाखापत्तनम महिला मंडल ने प्रार्थना गीत प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ में आगम संपादन का कार्य परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के समय आज से लगभग छप्पन वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ था। यह कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, किन्तु दुरूह है। यह हमारे धर्मसंघ द्वारा की जाने वाली जैन शासन की महान सेवा है। यह कार्य करना मानों श्रीजिनेश्वर देव की ही सेवा है, भगवान महावीर की सेवा है। इस कार्य में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का आशीर्वाद, चिंतन और श्रम तो रहा ही है, पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ का भी अत्यधिक श्रम रहा है। मानों वे कोई श्रुतपुरुष थे। उनके पास मेधा थी, प्रज्ञा थी और बाहुश्रुत्य था। उन महापुरुषों के चरणों में बैठकर इस महान कार्य में मुझे भी जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह कार्य काफी अंशों में पूरा हो चुका है तो अब भी काफी अंशों में अवशिष्ट है। वह कार्य आज भी गतिमान है।

इसिभासियाइं एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। व्याख्यान देनेवालों को इस ग्रंथ से अच्छी सामग्री प्राप्त हो सकती है। आगम और प्राचीन ग्रंथों के संपादन की दृष्टि से समणश्रेणी में समणी कुसुमप्रज्ञाजी का नाम प्रधानतया लिया जा सकता है। इनमें कार्य की लगन है, श्रमशीलता है। ये अच्छी वक्ता और संगायिका भी हैं। आगम आदि पर वक्तव्य का प्रसंग हो तो जैन विदुषी के रूप में एक नाम इनका लिया जा सकता है। ये खूब अच्छा विकास और कार्य करती रहें।'

एक-दूसरे के पूरक बनें विज्ञान और अध्यात्म

७ अक्टूबर। आज परम श्रद्धेय आचार्यवर की मंगल सन्निधि में विज्ञान समिति उदयपुर द्वारा विज्ञान संगोष्ठी का समायोजन हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ सुश्री सोनाक्षी के मंगल संगान से हुआ। इस अवसर पर भौतिक विज्ञानी डा. पी. एम. अग्रवाल, वरिष्ठ शरीरविज्ञानी डा. एल. के. भटनागर उदयपुर जिलाप्रमुख श्रीमती मधु मेहता ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'विज्ञान अपने आप में महत्त्वपूर्ण विषय है। विज्ञान का लक्ष्य है सत्य की खोज करना, उसे उद्‌घाटित करना। अध्यात्म साधना के द्वारा भी इस उद्‌देश्य की पूर्ति की जा सकती है। इस संदर्भ में दोनों एक ही भूमिका में दिखाई देते हैं। किन्तु जहां अध्यात्म का मुख्य लक्ष्य है चेतना की खोज और उसकी निर्मलता, वहीं विज्ञान का मुख्य लक्ष्य है भौतिक जगत का अनुसंधान। यदि इन दोनों विषयों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो अनेक नए तथ्य आविर्भूत हो सकते हैं। विज्ञान और अध्यात्म एक-दूसरे के पूरक बनें तो इस युति के द्वारा अच्छा कार्य किया जा सकता है।'

आज के कार्यक्रम में दिल्ली से समागत सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार श्री वेदप्रताप वैदिक ने अणुव्रत

के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया। परमपूज्य आचार्यवर ने इस प्रसंग में कहा--'वेदप्रतापजी विद्वान व्यक्ति हैं। विद्वान लोगों के पास ज्ञान-संपदा और चिंतन की शक्ति होती है। अभी वैदिकजी ने संकल्प व्यक्त किया कि वे अणुव्रत के कार्य में अपनी शक्ति का नियोजन करेंगे। गुरुदेव तुलसी की जन्म शताब्दी का प्रसंग हमारे सामने है। दिल्ली में वैदिकजी जैसे व्यक्तित्व गुरुदेव तुलसी के चिंतन को आगे बढ़ाने में और उसे प्रस्तुत करने में अपना अच्छा योगदान दे सकते हैं। जैसे फूलों की सुगंध को फैलाने का काम हवा करती है, ठीक उसी प्रकार महापुरुषों और अध्यात्म की सौरभ को साहित्यकार और पत्रकार विकीर्ण कर सकते हैं।' कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

पड़ोसी राष्ट्र नेपाल की पुरजोर प्रार्थना

आज के कार्यक्रम में भारत के पड़ोसी राज्य नेपाल के प्रवासी श्रद्धालुओं ने पूज्यवर से नेपाल में चतुर्मास करने की पुरजोर प्रार्थना की। इस क्रम में नेपाल के पर्यावरण मंत्री श्री हंसराज तातेड़ ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। उल्लेखनीय है--श्री तातेड़ किसी राष्ट्र की केन्द्रीय सरकार के प्रथम और एकमात्र मंत्री हैं, जो तेरापंथी परिवार से संबद्ध हैं। तेरापंथ समाज के लिए उनकी यह उपलब्धि गौरव की बात है। श्री किशनलालजी दूगड़, श्री ज्योतिकुमार बेंगानी, चतुर्मास प्रार्थना समिति की संयोजिका श्रीमती राजलक्ष्मी गोलछा, काठमाण्डु तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र हीरावत आदि ने अपनी श्रद्धासिक्त प्रार्थना प्रस्तुत की। इस अवसर पर नेपाल के उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की ओर से प्रेषित भावपूर्ण पत्र श्री चन्द्रकुमार गोलछा ने पूज्यवर को समर्पित किए। नेपाली भाषा में लिखित उन पत्रों का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है--

नेपाल के महामहिम उपराष्ट्रपतिश्री परमानन्द झा द्वारा प्राप्त पत्र

'नेपाल की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक एवं अन्य कई क्षेत्रों में शताब्दियों से मारवाड़ी समुदाय के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। मैंने महसूस किया है कि हिंसा का विरोध एवं सभ्य समाज तथा धार्मिक सेवा को अपना मूलमंत्र मानकर चलनेवाला जैन समुदाय सिर्फ शान्तिप्रिय ही नहीं, अपितु परिवर्तनशील भी है। इस समुदाय में निहित जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री महाश्रमणजी का पहली बार नेपाल में आगमन हो रहा है। उनका आगमन ही नेपाल के लिए गौरव का विषय है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें धर्मगुरु का सन् २०१५ में होने वाला आगमन सभी नेपालवासियों के लिए प्रतीक्षा का क्षण होगा।

केवल पैदल यात्रा करने वाले, भिक्षादान की अन्तिम अंश मात्र को ग्रहण करनेवाले, लोभ एवं मोहरहित तथा सभी सांसारिक सुख-सुविधाओं से दूर रहने वाले आचार्यश्री के आगमन को मैं पर्व के रूप में मनाए जाने की आशा व्यक्त करता हूं। ऐसे महान कार्य को सफल बनाने के लिए विराटनगर, धरान, दुहबी, धुलावारी, वितामोड, भद्रपुर, काठमाण्डो, वीरगंज, भैरहवा, पोखरा, बुटवल, सप्तरी, नेपालगंज सहित नेपाल के सभी संभागों से दर्जनों की सहभागिता में मूल समारोह समिति की संयोजक श्रीमती राजलक्ष्मी गोलछा के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल के भारत प्रस्थान की बात सुनकर मुझे बेहद खुशी हुई है।

नेपाल एक बहुभाषित एवं बहुधार्मिक देश है। इस मान्यता को अपने-अपने समुदाय से सफलता दिलाने का जो अभियान संचालित किया जा रहा है, मैं उसकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

परमानन्द झा
उपराष्ट्रपति- नेपाल

नेपाल के प्रधानमंत्री तथा उनकी मंत्रिपरिषद द्वारा प्राप्त पत्र

धार्मिक सेवा को अपना मूलमंत्र मानने वाले जैन समुदाय में निहित जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री महाश्रमणजी का पहली बार नेपाल आगमन होने की जानकारी प्राप्त कर मुझे खुशी महसूस हो रही है। यह आगमन सिर्फ नेपाल के जैन धर्मावलम्बियों के लिए ही नहीं, अपितु संपूर्ण नेपाली समुदाय के लिए खुशी की बात है।

नेपाल बहुजातीय, बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक विशेषताओं का एक अनुपम संगम स्थल है। इन्हीं विशेषताओं के बीच अनेकता हमारी राष्ट्रीय एवं स्वाभिमानरूपी राष्ट्रीय पहचान बनी हुई है। इसी राष्ट्रीय पहचान के अन्तर्गत

प्रत्येक जाति एवं धर्मावलम्बी व्यक्तियों की विशिष्ट तथा मौलिक परम्परा जुड़ी हुई है।

नेपाल की धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य कई क्षेत्रों में मारवाड़ी समुदाय का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें धर्मगुरु का सन् २०१५ में होने वाला आगमन सभी नेपालवासियों के लिए प्रतीक्षा का क्षण होगा।

केवल पदयात्रा करनेवाले, भिक्षादान के अन्तिम अंशमात्र को ग्रहण करनेवाले, लोभ तथा मोहरहित एवं सभी प्रकार की सांसारिक सुख-सुविधा से दूर रहनेवाले आचार्यश्री का आगमन नेपालवासियों के लिए एक सुखद सन्देश है।

ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य को सफल बनाने के लिए विराटनगर, धरान, दुहबी, धुलावारी, वितामोड, भद्रपुर, काठमाण्डो, वीरगंज, भैरहवा, पोखरा, बुटवल, सप्तरी, नेपालगंज सहित नेपाल के सभी क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोगों के प्रतिनिधिमंडल के भारत प्रस्थान की बात सुनकर मैं हर्षित हूं। आचार्यश्री के नेपाल आगमन के इस अभियान की पूर्ण सफलता की मैं कामना करता हूं।

सम्माननीय प्रधानमंत्री डा. बाबूराम भट्टराई की आज्ञा से

रामरिझन यादव

प्रधानमंत्री के प्रेस सलाहकार तथा मन्त्रिपरिषद का निजी सचिवालय, सिंहदरबार, काठमाण्डो नेपाल .

..तो बनेगा देश का भविष्य उज्ज्वल

८ **अक्टूबर।** परम श्रद्धेय आचार्यवर की मंगल सन्निधि में आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में अणुव्रत न्यास द्वारा आयोजित राजस्थानस्तरीय अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता के संभागियों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। इस क्रम में बक्शी पब्लिक स्कूल कोटा और सुश्री मनस्वी व्यास ने सुमधुर स्वरों में निर्धारित गीतों का संगान किया। अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी श्री धनराज बोथरा आदि ने 'टूटते परिवारों का बच्चों पर प्रभाव' नामक अणुव्रत निबन्ध लेखन प्रतियोगिता के चयनित निबन्धों का संग्रह पूज्य चरणों में समर्पित किया। अणुव्रत प्रभारी शासनश्री मुनि सुखलालजी ने इस अवसर पर अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी संभाषण हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन के उपरान्त कहा--'अणुव्रत न्यास द्वारा संचालित गीत गायन प्रतियोगिता बच्चों के विकास का अच्छा माध्यम है। बच्चों में बौद्धिक क्षमता का विकास हुआ है तथा हो रहा है। इसके साथ-साथ उनमें चारित्रिक और नैतिक विकास भी हो। उनमें सत्संस्कारों का विकास होगा तो देश का भविष्य उज्ज्वल बन सकेगा।'

आज प्रवचन के पश्चात् पूज्यवर ने **दिल्ली जाने से पहले-पहले राजलदेसर का स्पर्श करने की घोषणा की।**

जैन आगम मनीषा सम्मान समर्पण समारोह

आज मध्याह्न में परमाराध्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में जैन विश्वभारती द्वारा उदयपुर निवासी प्रो. नारायणलाल कच्छारा को 'जैन आगम मनीषा' सम्मान से सम्मानित किया गया। एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन द्वारा प्रायोजित यह सम्मान प्रतिवर्ष ऐसे व्यक्ति को दिया जाता है, जिसने जैन आगमों एवं जैनविद्या के क्षेत्र में शोधपूर्ण एवं विशिष्ट कार्य के द्वारा जैन आगमों के संवर्द्धन व विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। कार्यक्रम में जैविभा के संयुक्त मंत्री श्री विजयसिंह चोरड़िया ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी चोरड़िया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए स्मृतिचिह्न एवं पुरस्कार राशि इक्यावन हजार रुपये का चैक प्रो. कच्छारा को प्रदान किया। प्रो. कच्छारा ने भावपूर्ण स्वरों में अपना स्वीकृति भाषण प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'प्रो. कच्छारा एक प्रबुद्ध और जैन विद्या के क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले व्यक्ति हैं। जैन विश्वभारती द्वारा इनके कार्यों का अंकन किया गया है। ये आगे भी अच्छा कार्य करते रहें और जैन आगम तथा जैनविद्या के क्षेत्र में अपनी पुनीत सेवाएं देते रहें।'

करें समय का समुचित नियोजन

९ **अक्टूबर।** प्रातःकालीन कार्यक्रम में वीणा कैसेट की गायिका सुचित्रा ने गीत प्रस्तुत किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'समय अपनी गति से चलता रहता है। अपेक्षा

यह है कि समय का समुचित उपयोग करें। अधिकाधिक समय साधना और स्वाध्याय में लगाएं। इससे कल्याण का पथ प्रशस्त हो सकेगा। समय की महत्ता को समझने वाला अपने कार्य को निष्पत्ति तक पहुंचा सकता है।'

पंचामृत की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'साधु को अपने आचार के प्रति सदैव सजग रहना चाहिए।' गुवाहाटी एवं बेंगलुरु से समागत ज्ञानशाला के प्रशिक्षकों एवं ज्ञानार्थियों को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने ज्ञानशाला को संस्कारों के बीजारोपण का महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया। आज 'हाजरी' का वाचन करते हुए पूज्यप्रवर ने उसकी कई धराओं का विस्तार से विवेचन किया। साधु-साध्वियों ने सामूहिक रूप से 'लेखपत्र' का समुच्चारण किया।

कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में इन्दोर तेयुप द्वारा साध्वी सरोजकुमारजी की प्रेरणा से भरवाए गए नशामुक्ति के २११ फार्म व बारह व्रत के ३० फार्म, तेरापंथ समाज दलकोला द्वारा साध्वी त्रिश्लाकुमारीजी की प्रेरणा से भरवाए गए १०१ बारहव्रती श्रावकों के फार्म और चारभुजा तेरापंथ समाज द्वारा साध्वी कनकश्रीजी (राजगढ़) की प्रेरणा से भरवाए गए ५२५१ विद्यार्थी अणुव्रत संकल्प पत्र पूज्यवर को उपहृत किए गए। गत दिनों साध्वी कुन्थुश्रीजी की प्रेरणा से सूरत में भरे गए ६०० बारहव्रती श्रावक-श्राविकाओं के फार्म अ. भा. तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती कनक बरमेचा ने पूज्यप्रवर को उपहृत किए थे।

पूर्वांचल यात्रा के अन्तर्गत विभिन्न घोषणाएं

नेपाल-बिहार जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के बैनर तले पन्द्रह क्षेत्रों के २४३ व्यक्तियों के संघ की ओर से अध्यक्ष श्री हंसराज बेताला, गुलाबबाग सभा के मंत्री श्री प्रेमचन्द बैद, फारबिसगंज सभा के उपाध्यक्ष श्री आलोक दूगड़, किशनगंज से श्री राजेश बैद, दलकोला से श्री हरीश बैद, सिलीगुड़ी से श्री नवरतन पारख एवं शासनश्री मुनि किशनलालजी ने अपनी प्रार्थना श्रीचरणों में प्रस्तुत की। इस अवसर पर बिहार के उपमुख्यमंत्री श्री सुशीलकुमार मोदी द्वारा पूज्यवर की सेवा में प्रेषित पत्र प्रस्तुत किया गया।

बिहार के उपमुख्यमंत्री द्वारा प्रेषित पत्र

"मुझे नेपाल-बिहार जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्षजी से यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पूर्वांचल यात्रा के क्रम में बिहार राज्य की राजधानी पटना पधारने की घोषणा की है। आचार्यजी का उस वर्ष का चातुर्मास नेपाल या बिहार क्षेत्र में संभावित है।

मुझे जानकारी मिली है कि आपका मिशन विश्व शान्ति, अहिंसा, साम्प्रदायिक सद्भाव, व्यसनमुक्त समाज का निर्माण, राष्ट्रीय चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना है। बिहार की वर्तमान सरकार भी समान उद्देश्यों के लिए कार्यरत है।

मैं आपसे विनम्र अनुरोध करता हूं कि अहिंसक चेतना के जागरण के लिए पदयात्रा करते हुए आप बिहार पधार रहे हैं, अतः उस वर्ष का चातुर्मास बिहार राज्य में करके भगवान महावीर एवं भगवान बुद्ध की इस पावन धरा को अपनी चरणरज से पवित्र करें एवं बिहार के नवनिर्माण में अपना सहयोग प्रदान करें।

सुशीलकुमार मोदी
उपमुख्यमंत्री- बिहार

बिहारवासियों की प्रार्थना के क्रम में उपमुख्यमंत्री श्री मोदी के अतिरिक्त सार्वजनिक निर्माण मंत्री श्री नन्दकिशोर यादव, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री श्याम रजक, पर्यटन मंत्री श्री सुशीलकुमार 'पिन्टू', विधान परिषद सदस्य श्री अवधेशनारायण सिंह, विधायक श्री नितिन नवीन आदि के भावपूर्ण पत्र प्राप्त हुए हैं।

मालवा (मध्यप्रदेश) के सोलह क्षेत्रों के दो सौ से अधिक लोगों का संघ गुरु चरणों में उपस्थित हुआ। संघ की ओर से मालवा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री पूनमचन्द बरबेटा, मंत्री श्री नितिन चौधरी, पूर्व अध्यक्ष श्री गोपीलाल सामोता एवं अमृत सांसद श्री फूलचन्द कासवां ने अपने विचार प्रस्तुति के साथ चतुर्मास की भावपूर्ण प्रार्थना की। इन्दोर के निष्ठाशील कार्यकर्ता श्री भूरामल श्यामसुखा तथा विभिन्न सभाओं के अध्यक्ष भी इस प्रार्थना में सम्मिलित थे। मालवा से संबद्ध भ्रातृयुगल मुनि गौतमकुमारजी, मुनि सुधांशुकुमारजी एवं समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने भी मालवा के लोगों की प्रार्थना में अपने स्वरों को सम्मिलित किया।

विभिन्न क्षेत्रों की प्रार्थनाओं को अवधानपूर्वक सुनने के बाद करुणामूर्ति आचार्यवर ने कहा--'हृदय सम्राट भगवान महावीर को सभक्ति वंदना। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी एवं परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ, जिन्हें साक्षात् देखा, जिनके चरणों में रहने का सौभाग्य मिला, उन गुरुद्वय के चरणों में वंदना। साध्वीप्रमुखाजी का अभिवादन एवं मंत्री मुनि आदि रत्नाधिक संतों को वंदना करते हुए मैं कहना चाहता हूं--**'द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एवं शारीरिक स्वास्थ्य आदि की सारी अनुकूलताएं रहती हैं तो पूर्वांचल यात्रा में एक मर्यादा महोत्सव सिलीगुड़ी करने का भाव है।**

दूसरी बात--कल नेपाल की बात कही थी। **सारी अनुकूलताएं रहती हैं तो नेपाल के साथ-साथ भूटान का भी स्पर्श करने का भाव है।**

ओडिसा प्रान्त को स्पर्श करने की बात मैं पहले ही कह चुका हूं। **सारी अनुकूलताएं रहीं तो सन् २०१८ का मर्यादा महोत्सव ओडिसा में कहीं करने का भाव है। ओडिसा में कटक जाना है। इसके साथ भुवनेश्वर का भी स्पर्श करने का भाव है। पूर्वांचल यात्रा में फारबिसगंज, कटिहार, गुलाबबाग, किशनगंज, दलकोला का स्पर्श करने का भाव है।'**

आचार्यवर ने आगे कहा--'मालवा के लोग अपनी दृष्टि से संभवतः बढ़िया मौका देखकर आए हैं। उन्होंने सोचा होगा कि ओडिसा तक तो आ ही रहे हैं। हमें भी अवसर मिल जाए। ओडिसा तक तो आइडिया साफ हो गया है। उसके बाद कौन-सा रास्ता लूं, यह अभी तक, आज की घड़ी तक निर्णय नहीं लिया है। इसलिए इस संदर्भ में अभी कुछ भी कहना कठिन है। आप अपना प्रयास करते रहें। मालवा में गुरुदेव महाप्रज्ञजी पधारे थे। मैं भी उनके साथ था। अभी कुछ वर्ष पहले की ही बात है। मालवावासी चतुर्मास के लिए अभी प्रतीक्षा करें।

मैंने केलवा की तपोभूमि में इन महीनों में खासकर संवत्सरी के बाद यात्रा के बारे में काफी कुछ कह दिया है। अब मेरी इच्छा है कि यात्रा के बारे में इससे ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहिए। इस संदर्भ में मैंने अपने लिए एक शब्दावली बनाई है--**'अनिश्चित काल के लिए एक निर्णय करता हूं कि सन् अथवा संवत् से प्रतिबद्ध आगामी तीन वर्षों के बाद का चतुर्मास, दो वर्ष बाद का मर्यादा महोत्सव, एक वर्ष बाद की क्षेत्र स्पर्शना--इनकी घोषणा यथासंभव नहीं करूंगा। यह निर्णय कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा से लागू हो जाएगा।'**

१० अक्टूबर। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में केन्द्रीय कोयला मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रवास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष श्री परमेश्वर बोहरा के स्वागत भाषण के बाद कानपुर के अमृत सांसद श्री टीकमचन्द सेठिया ने श्री जायसवाल का परिचय दिया।

अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए श्रीप्रकाश जायसवाल ने कहा--'मैं यहां मंत्री के रूप में नहीं, एक श्रोता और भक्त के रूप में उपस्थित हुआ हूं। आचार्य तुलसी के प्रति मेरे मन में श्रद्धा है। संकीर्णता और जाति-वर्ग की भावना से ऊपर उठकर उन्होंने मानव धर्म का मार्ग दिखाया। आज के प्रतिस्पर्धा के युग में मानव की सोच सही दिशा में चले तो इंसानियत और भाईचारे की भावना को मजबूती मिलेगी। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा लाखों-करोड़ों लोगों को प्रभावित किया। उन्होंने जो सिद्धान्त, आचारसंहिता और आदर्श प्रस्तुत किए, उनका जीवन में थोड़ा-सा भी पालन हो तो व्यक्ति के साथ-साथ समाज का भी बहुत भला होगा।'

पूज्य आचार्यवर की ओर अभिमुख होकर मंत्री महोदय ने कहा--'मेरी कर्मभूमि कानपुर में आचार्यश्री के दर्शन और प्रवचन श्रवण का सौभाग्य प्राप्त होगा, इसकी मुझे विशेष प्रसन्नता है। मुझे उस दिन की प्रतीक्षा रहेगी।'

गुवाहाटी चतुर्मास की उद्घोषणा

गुवाहाटी का विशाल संघ पूर्वांचल यात्रा में चतुर्मास की प्रार्थना के साथ श्रीचरणों में उपस्थित हुआ। संघ की ओर से गुवाहाटी सभा के मंत्री श्री निर्मल कोटेचा, श्री विजयसिंह डागा, श्री मानसिंह बैद, बंगाईगांव मर्यादा महोत्सव हेतु श्री जीवनमल मालू ने पुरजोर प्रार्थना की। इस अवसर पर असम के राज्यपाल श्री जानकीवल्लभ पटनायक द्वारा प्रेषित पत्र का वाचन किया गया। राज्यपाल महोदय का पत्र इस प्रकार है--

असम के राज्यपाल द्वारा प्रेषित पत्र

"मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आचार्य महाप्रज्ञजी के शिष्य आचार्य महाश्रमण ने पूर्वोत्तर आने का संकेत दिया है। यह पूरे असमवासियों के लिए गौरव का विषय है कि अहिंसा के ध्वजवाहक अपनी धवल सेना के साथ पैदल चलकर शान्ति, सद्भाव एवं अहिंसा का सन्देश देने के लिए आ रहे हैं।

मैं अपने अन्तःकरण से आपके आगमन की अनुशंसा करते हुए हार्दिक शुभकामना देता हूं और असमवासियों की तरफ से अपील करता हूं कि शीघ्रातिशीघ्र असम की पावन भूमि को अपने चरणों से पवित्र करें।

जानकीवल्लभ पटनायक
राज्यपाल- असम

असम की प्रार्थना में वहां से संबद्ध मुनि मननकुमारजी एवं उनकी संसारपक्षीया बहन समणी नीतिप्रज्ञाजी ने अपने स्वर मिलाए। संघ ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। श्रीमती पुष्पा सिंघी (कटक) ने इस अवसर पर अपनी पुस्तक 'महाप्रज्ञ : बिम्ब-प्रतिबिंब' पूज्यप्रवर को भेंट की।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि के पांचवें अध्याय में वर्णित अहिंसा के विविध सूत्रों की विशद विवेचना की। विभिन्न प्रार्थनाओं के संदर्भ में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'आज गुवाहाटी के काफी लोग यहां उपस्थित हैं। राजलदेसर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मैंने असम जाने का पहले ही कह दिया है। मेरा आजकल चिंतन बन गया है कि मैं श्रावकों को ज्यादा कष्ट देना नहीं चाहता। अर्ज के लिए जो बात मेरे दिमाग में जंची हुई हो, उसकी मनुहार कराने के लिए बार-बार मैं श्रावकों को बुलवाऊं, उन्हें संघ रूप में आने की तकलीफ दूं, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं तो कई बार यहां तक सोचता हूं कि आप लोग कोई न भी आएं तो भी मैं आने की सोच सकता हूं, क्योंकि मुझे अपने श्रावकों के पास जाने में कैसा संकोच?

यह भी ठीक है कि आप अपना कर्तव्य निभाते हैं, निवेदन-प्रार्थना करते हैं। ऐसा करने से एक सुन्दर माहौल बन जाता है। अभी गुवाहाटी के लोगों ने प्रार्थना की। मैंने ध्यान से आपकी बात सुनी है। परमाराध्य परमपूज्य हृदय सम्राट भगवान महावीर को मेरा वंदन। महामना परम श्रद्धेय आचार्य भिक्षु की तपोभूमि और तेरापंथ की जन्मस्थली केलवा में बैठा मैं उन्हें श्रद्धायुक्त वंदन करता हूं। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी एवं परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी, जिनके साये में, जिनके चरणों में और जिनके उपपात में मुझे रहने एवं काम करने का मौका मिला, उन गुरुद्वय को मेरी वन्दना। साध्वीप्रमुखाजी को मेरा अभिवादन। मंत्री मुनिश्री और रत्नाधिक संतों को वंदन करता हुआ मैं कहना चाहता हूं--**'द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, शारीरिक स्वास्थ्य, संघ की स्थितियां और देश काल की स्थितियां--इन सबकी अनुकूलता रही तो सन् २०१६ का चतुर्मास गुवाहाटी करने का भाव है।**

असम में यथासंभव चतुर्मास ही नहीं करना है, वहां भ्रमण भी करना है। कार्यक्रम कहां, कैसे, किस प्रकार होगा, अभी कहना कठिन है। बाद में विस्तार से कार्यक्रम निर्धारित होने के बाद ही इस विषय में कुछ कहा जा सकेगा। अभी तो इतना ही कहा जा सकता है कि असम में यथासंभव विभिन्न क्षेत्रों का स्पर्श एवं भ्रमण करने का भाव है। शासन गौरव मुनि बुद्धमल्लजी स्वामी, शासनश्री साध्वी मोहनाजी, शासन गौरव साध्वी गोरांजी आदि हमारे अनेक साधु-साध्वियां असम गए हैं। जहां हमारे पूर्वाचार्य नहीं पधार सके, उन क्षेत्रों में मेरा जाना हो तो और भी अच्छी बात होगी। **इस यात्रा में कानपुर के बाद बनारस का भी स्पर्श करने का भाव है।' आचार्यवर ने यह भी घोषणा की--'दिल्ली जाने से पहले-पहले सुजानगढ़, पड़िहारा और नोखा का स्पर्श करने का भाव है।'**

आचार्यवर ने आगे कहा--'सन् २०१७ तक मेरे सारे चतुर्मास निर्णीत हो गए हैं और आगे के लिए अब रोक लगाने की बात सोच ली है। सन् २०१७ के बाद ओडिसा यात्रा घोषित है। हमें वहां जाना है। वहां के लोग इस मानसिकता को पुष्ट करें कि हमें समय का उपयोग करना है।' (उल्लेखनीय है--सन् २०१२ का चतुर्मास जसोल, सन् २०१३ का लाडनूं, सन् २०१४ का दिल्ली, सन् २०१५ का विराटनगर (नेपाल), सन् २०१६ का गुवाहाटी एवं सन् २०१७ का कोलकाता निर्णीत हो चुका है)

गुवाहाटी संघ द्वारा उपहृत व्रतदीक्षा आदि के फार्म की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'अभी मेरे पास गुवाहाटी से संकल्प पत्र के रूप में काफी फार्म आदि आए हैं। लगता है साध्वियों ने अच्छा श्रम किया है। साध्वी निर्वाणश्री यात्रा में बहुत दूर चली गई हैं। हमारी साध्वियां इतनी दूर-दूर तक चली जाती हैं। पता नहीं कौन-सी

शक्ति उनके साथ काम करती है। महिला होकर भी वे कितनी दूर जाकर अपना काम करती हैं। साध्वी निर्वाणश्री प्रबुद्ध साध्वी हैं। वे असम में जब तक हैं, वहां खूब अच्छा काम करें।

इन दिनों बेंगलुरु व गुवाहाटी की ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थियों, प्रशिक्षकों एवं कार्यकर्ताओं ने पूज्यवर के दर्शन किए। देश भर में स्थापित ज्ञानशाला के नेटवर्क के रूप में दोनों ज्ञानशालाओं ने पूज्यप्रवर की सेवा-उपासना का लाभ प्राप्त किया। बेंगलुरु ज्ञानशाला ने प्रातः व रात्रि में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सहसंयोजिका श्रीमती नीता गादिया ने ज्ञानशाला की रिपोर्ट प्रस्तुत की। ज्ञानार्थियों को साध्वीप्रमुखाश्री का भी मार्गदर्शन मिला।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'बेंगलुरु में लम्बे समय से ज्ञानशाला का सुन्दर क्रम चल रहा है। उससे जुड़े प्रशिक्षक और कार्यकर्ता अच्छा काम करते रहें।'

गत दिनों मगरतलाब निवासी श्री पुखराज नाहर चेन्नई से १२५ लोगों के संघ के साथ पूज्यप्रवर की सन्निधि में उपस्थित हुए। संघ ने बीस दिनों तक दर्शन-उपासना का लाभ लिया।

हिसाब पूरा कर दिया

१० अक्टूबर २०११ को प्रातः मंगलपाठ के पश्चात बेंगलुरु से समागत ज्ञानशाला परिवार ने पूज्यवर से गोचरी की प्रार्थना की। पूज्यवर ने उन्हें फरमाया--'इस बार हमने निर्णय किया है कि साठ दिन से कम सेवा करने वालों के यहां गोचरी न जाएं।' प्रशिक्षक बोले-'गुरुदेव ! हम जब श्रीडूंगरगढ़ आए थे, तब आप गोचरी नहीं पधारे और फरमाया कि अगली बार आएंगे तब दो बार गोचरी करवा लेना। जब हम सरदार ाहर आए, तब एक बार ही गोचरी हो सकी।'

आचार्यवर ने श्रद्धालुओं की प्रार्थना सुन ली, किन्तु कोई सकारात्मक उत्तर नहीं दिया। तत्पश्चात आचार्यवर प्रातःकालीन भ्रमण हेतु पधार गए और लौटते समय संतों से पूछा कि बेंगलुरु ज्ञानशाला कहां ठहरी हुई है ? कार्यकर्ताओं से आवास स्थल की अवगति प्राप्त कर आचार्यवर उसी ओर पधार गए। सहसा आराध्य को अपने आंगन में आते देख संपूर्ण ज्ञानशाला परिवार हर्ष के पारावार में गोते लगाता हुआ किकर्तव्यविमूढ़-सा बन गया। आचार्यवर वहां पधारे और प्रशिक्षकों से पूछा--'गत वर्ष एक बार ही गोचरी क्यों हुई?' प्रशिक्षकों ने निवेदन किया 'गुरुदेव! आप जिस दिन गोचरी पधारे थे, उसके अगले दिन हम वहां से चले गए थे, इस कारण दो बार गोचरी नहीं हुई।' आचार्यवर ने अनुग्रह करवाते हुए ज्ञानार्थियों, प्रशिक्षकों एवं व्यवस्थापकों के हाथ से गोचरी की और फरमाया--'हमने हिसाब पूरा कर दिया है। इस संदर्भ में अब कोई वचन अवशिष्ट नहीं है।' आचार्यवर के मुखारबिन्द से यह सुनकर और आचार्यवर की वचननिष्ठा को साक्षात् देखकर ज्ञानशाला परिवार और उपस्थित श्रद्धालु श्रद्धाप्रणत थे।

तेरापंथ विकास परिषद एवं तेरापंथ अमृत संसद का संयुक्त अधिवेशन

१० अक्टूबर। तेरापंथ अमृत ससंद और तेरापंथ विकास परिषद का १७वां संयुक्त वार्षिक अधिवेशन ८-१० अक्टूबर को पूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में आयोजित हुआ। अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति में ज्यादा फासला नहीं होना चाहिए। अधिवेशन के दौरान सम्यक् चिंतन चले और मंथन के पश्चात् वह निर्णय तक पहुंचे।'

तेरापंथ समवसरण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में महिला अमृत संसदों की गीत प्रस्तुति के बाद श्री तरुण सेठिया ने कविता प्रस्तुत की। तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री लालचन्द सिंघी ने अधिवेशन के दौरान हुए चिंतन-मंथन एवं कार्य योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की। अमृत संसद में परित 'एक व्यक्ति एक पद' की अवगति देते हुए श्री सिंघी ने कहा--'ये नियम १ नवम्बर २०११ से प्रभावी होंगे।'

तेरापंथ विकास परिषद के प्रभारी मुनि उदितकुमारजी ने प्रारंभ के अधिवेशनों की चर्चा करते हुए कहा--'चिंतन के बाद गृहीत निर्णयों के आधार पर सुव्यवस्थित कार्य योजना बने, जिससे लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।'

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने कहा--'जो गतिशील होता है, वह गंतव्य तक पहुंच सकता है। गतिशील वह है, जो अनुशासित है। तेरापंथ की विकासशीलता का आधार अनुशासन है। श्रावक समाज दिशा निर्देशिका श्रावक समाज के लिए अनुशासन है।'

मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी ने अपने अभिभाषण में कहा--'पूरा विश्व विकास का आकांक्षी है। मर्यादा व संयम के पथ पर चलने वाला विकास कर सकता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। मर्यादा की अवमानना करने वाला अपने भविष्य को धुंधला बना लेता है। सबके मन में नियमनिष्ठा पुष्ट होती रहे, यह अपेक्षा है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'किसी भी कार्यक्रम को व्यापक बनाने के लिए जनमत जरूरी है। गांधीजी ने इसे आजादी का हथियार बनाया। आचार्य भिक्षु ने जन-जन को प्रतिबोधित करने में अपने समय का नियोजन किया। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से जनमत को जागृत करने का प्रयास किया। व्यक्ति के सामने लक्ष्य स्पष्ट हो, वहां तक पहुंचने का दृढ़ संकल्प बल हो और उस दिशा में पुरुषार्थ का स्म्यक् नियोजन हो तो सही समय पर लक्ष्य उपलब्ध हो सकता है।'

महाश्रमणीजी ने आगे कहा--'तेरापंथ विकास परिषद समाज का एक आइना है, जिसमें समाज का स्वरूप देखा जा सकता है। इसकी नजर समाज पर रहे। समाज की इच्छा और आकांक्षा उसके आधार हैं। समाज के हर व्यक्ति को यह अहसास हो कि तेरापंथ विकास परिषद हमारे योगक्षेम हेतु तत्पर है, उसे समाज के हितों की चिन्ता है।' समाज में बढ़ रहे प्रदर्शन, आडम्बर, नशा, तलाक व सामाजिक विघटन पर सदस्यों का ध्यान आकर्षित करते हुए महाश्रमणीजी ने आह्वान किया--'अमृत संसद के सदस्य समाज में चेतना जगाकर जनमत को प्रभावित करें, रचनात्मक और सृजनात्मक पक्ष को महत्त्व दें।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मार्गदर्शक प्रवचन में कहा--'तेरापंथ विकास परिषद और तेरापंथ अमृत संसद का अधिवेशन हो रहा है जो अब समाप्ति के सन्निकट है। मैं तेरापंथ विकास परिषद के जन्मकाल से ही लगभग जुड़ा हुआ हूं और उसका साक्षी हूं।

आचार्यवर ने आगे कहा--'इन दोनों के मंच पर चिंतन-मंथन होता है, निर्णय होता है और मेरा मानना है कि निर्णय की क्रियान्विति भी होती है। श्रावक समाज दिशानिर्देशिका आई, उसमें जो नियम व विधान हैं, उसकी अगर तटस्थ समीक्षा करें तो पता चलेगा कि कितने व्यक्तियों द्वारा कितने नियमों का उल्लंघन हो रहा है। जहां तक मेरा विचार है अधिकांशतया तो उनका पालन हो रहा है। हमें विरासत में एक स्थिति मिली है कि श्रावक समाज में आचार्यों के इंगित के प्रति बड़ा अहोभाव है, श्रद्धा का भाव है और समर्पण का भाव भी है। उनको सम्यक् निर्देश मिलना चाहिए, सम्यक् जानकारी मिलनी चाहिए, क्योंकि जानकारी के अभाव में अक्सर भूल हो जाती है। विकास परिषद या अमृत संसद में जो निर्णय होते हैं, उनकी जानकारी श्रावक समाज को अच्छी तरह से मिलती है या नहीं, इस संदर्भ में हमने कल्पना की--एक ऐसी पुस्तक आनी चाहिए जो श्रावक समाज को जानकारी दे सके। इससे जानकारी के अभाव में होने वाली गलतियों पर रोक लग सकेगी। चिंतन के परिणमस्वरूप श्रावक समाज दिशानिर्देशिका पुस्तक आई। इससे काफी सुविधा हो गई है। नियम/विधान आदि के बारे में अब पूछने की ज्यादा जरूरत नहीं। इस पुस्तिका से काफी जानकारियां प्राप्त की जा सकती हैं।

सुदूर क्षेत्रों से समागत कार्यरत सांसदों के निष्ठाभाव की सराहना करते हुए आचार्यवर ने कहा--'सांसद समय निकाल कर यहां आते हैं। उन्हें दर्शन-सेवा का लाभ मिलता है। इस बार 'एक पद एक व्यक्ति' वाला निष्कर्ष निकलना महत्त्वपूर्ण है। मेरे मन में प्रश्न उठता है कि विकास परिषद और तेरापंथ अमृत संसद--ये दो नाम क्यों रखे जा रहे हैं? निर्णय अमृत संसद करती है या विकास परिषद करती है? लोकतांत्रिक प्रणाली के अन्तर्गत देखें तो यहां विधायिका भी है और कार्यपालिका भी है। विधान या नियम बनाने का अधिकार विधायिका यानि संसद के पास है और उसे क्रियान्वित करने का अधिकार कार्यपालिका, यानी सरकार के पास है। निर्णय विकास परिषद का या अमृत संसद का? यह एक प्रश्न हो सकता है। जहां निर्णय का प्रश्न है, उचित हो तो हमें यह कहना चाहिए कि यह अमृत संसद का निर्णय है और क्रियान्विति विकास परिषद के द्वारा होनी चाहिए।

आचार्यवर ने आगे कहा--'कभी-कभी हमें अपने निर्णय पर पुनर्विचार भी कर लेना चाहिए। जब लगे कि अतीत में हुआ यह निर्णय वर्तमान की अपेक्षा की संपूर्ति नहीं कर पा रहा है तो उस निर्णय को बदलने या उस पर पुनर्विचार करने में कोई आपत्ति वाली बात नहीं होनी चाहिए। आगे बढ़ने की प्रक्रिया में जब कभी लगे कि अब मुड़ना चाहिए तो चिंतनपूर्वक मुड़ना भी स्वीकार कर लेना चाहिए। जहां भी लगे कि श्रावक समाज दिशानिर्देशिका में समाविष्ट निर्णय की इतनी प्रासंगिकता नहीं है तो श्रावक समाज उसकी समीक्षा कर सकता है। मूल बात यह है कि हमें हर जगह कोई लकीर का फकीर नहीं बनना है। औचित्य हो तो नियम बनाएं, औचित्य न हो तो नियम

बदलें या नियम हटा दें। प्रासंगिकता, उपयोगिता और समाज के हित पर ध्यान देकर आगे बढ़ना चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मुनिश्री उदितकुमारजी को इस बार विकास परिषद के प्रभारी का दायित्व दिया गया। मुझे लगता है ये हमारे संघ के युवा संतों में एक कुशल मुनि हैं, प्रबुद्ध हैं, चिंतनशील और श्रमशील हैं, दायित्व के प्रति काफी जागरूक हैं। यदा-कदा विकास परिषद की बात को लेकर मेरे पास आते रहते हैं।' आभारज्ञापन परिषद के महामंत्री श्री संपतजी नाहटा ने किया।

अधिवेशन के प्रथम दिन समूहचर्चा के तीन सत्रों में निर्धारित विषयों पर ग्यारह समूहों में विभिन्न संस्थाओं व उनकी प्रवृत्तियों पर विशद विमर्श किया गया। समूह में स्वीकृत चिंतनीय व करणीय बिन्दुओं को दूसरे दिन सदन में विचारार्थ प्रस्तुत किया गया। संस्थागत प्रस्तुति के रूप में सभी केन्द्रीय संस्थाओं एवं जय तुलसी फाउंडेशन ने निर्धारित बिन्दुओं पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। विकास परिषद के प्रभारी सदस्यों ने अपनी समीक्षा से सदन को अवगत कराया। अधिवे ान में प्रबंध मंडल के सदस्यों, संस्थागत अधिकारियों, प्रतिनिधियों व विशेष आमंत्रित सदस्यों सहित लगभग १४३ सदस्यों की संभागिता रही।

अधिवेशन के पहले व दूसरे दिन के रात्रिकालीन सत्र पूज्यवर की सन्निधि में चले। इन सत्रों में विभिन्न विषयों पर पूज्यवर का पावन पथदर्शन प्राप्त हुआ। अधिवेशन के विभिन्न सत्रों में केन्द्रीय संस्थाओं के प्रभारी, सहप्रभारी साधु-साध्वियों का भी चिन्तन उपलब्ध रहा।

तेरापंथ अमृत संसद में पारित 'एक व्यक्ति एक पद' विषयक प्रस्ताव

मूल नियम : एक व्यक्ति एक पद पर ही रहे।

पद की परिभाषा

१. संस्था के संविधान में मान्य पद यथा अध्यक्ष/उपाध्यक्ष/मंत्री/सहमंत्री/कोषाध्यक्ष/सहकोषाध्यक्ष/संगठन मंत्री तथा प्रचार-प्रसार मंत्री को पद की परिभाषा में माना जाएगा।
२. केन्द्रीय एवं संघीय संस्थाओं एवं ट्रस्टों के प्रमुख न्यासी/प्रबन्ध न्यासी एवं संयुक्त प्रबन्ध न्यासी और निर्वाचित ट्रस्टी भी पद की परिभाषा में सम्मिलित होंगे।

निम्नांकित पद की परिभाषा में नहीं आएंगे

१. संरक्षक, २. परामर्शक, ३. निवर्तमान अध्यक्ष, ४. पंचमण्डल, ५. कार्यसमिति के सदस्य, ६. समितियों एवं उपसमितियों के संयोजक/प्रभारी, ७. अनुदान से बने ट्रस्टी।

- जो व्यक्ति किसी भी केन्द्रीय संस्था में पदाधिकारी है, वह अन्य किसी केन्द्रीय संस्था अथवा स्थानीय संघीय संस्था व अणुव्रत समिति का पदाधिकारी न रहे।
- कोई व्यक्ति किसी एक स्थानीय संघीय संस्था अथवा अणुव्रत समिति में पदाधिकारी है, वह अन्य स्थानीय संघीय संस्था, अणुव्रत समिति अथवा केन्द्रीय संस्था में पदाधिकारी नहीं रह सकेगा।
- यदि किसी व्यक्ति की संस्थाओं में दो पद की स्थिति बन जाए तो तीन महीने के अन्दर किसी भी एक पद से मुक्त होना होगा।
- जहां पदेन सदस्य पदाधिकारी होने का प्रावधान है, वहां पर उनको कार्यकारिणी में लिया जा सकता है या विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में बुलाया जा सकता है। परन्तु उन्हें पदाधिकारी नहीं बनाया जा सकता।
- एक व्यक्ति दो केन्द्रीय संस्थाओं से अधिक में कार्यकारिणी सदस्य न रहे। यदि कोई पदाधिकारी है तो वह अन्य किसी एक केन्द्रीय संस्था का कार्यकारिणी सदस्य बन सकता है।
- तेरापंथ विकास परिषद द्वारा अधिमानित सभी केन्द्रीय संस्थाओं एवं स्थानीय अणुव्रत समितियों में एक व्यक्ति निरंतर दो कार्यकाल से अधिक अध्यक्ष पद पर न रहे और उसका एक कार्यकाल दो वर्ष से अधिक न हो।

नोट : उपरोक्त नियम १ नवम्बर २०११ से प्रभावी होंगे। यदि कोई व्यक्ति पहले से दो पदों पर अवस्थित है तो उसे इस नियम के तहत तीन माह के भीतर किसी एक पद से मुक्त होना होगा।

प्रेक्षाध्यान के विविध उपक्रम

गत सप्ताह परमाराध्य आचार्यवर की मंगल सन्निधि में प्रेक्षा फाउण्डेशन जैन विश्वभारती द्वारा प्रेक्षाध्यान के विविध उपक्रम समायोजित हुए। गत २८ **सितम्बर से ५ अक्टूबर तक प्रेक्षाध्यान शिविर** की समायोजना की गई। इस शिविर के संभागियों को पूज्य आचार्यवर का पावन पाथेय प्राप्त हुआ। शासनश्री मुनि किशनलालजी, प्रेक्षाध्यान प्रभारी मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि नीरजकुमारजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी, सौम्यप्रज्ञाजी, प्रेक्षाप्रज्ञाजी, श्रद्धाप्रज्ञाजी, श्री मिश्रीमलजी चौधरी, श्री पारस दूगड़, श्री जीतमलजी गुलगुलिया, श्री मदनलाल फूलफगर ने प्रशिक्षक के रूप में शिविरार्थियों को प्रेक्षाध्यान के विविध प्रयोग करवाए। शिविर के अन्तिम दिन प्रातःकालीन कार्यक्रम में शिविरार्थी श्रीमती उर्मिला, श्रीमती प्रेमलता एवं श्री राजमल दूगड़ ने अपने अनुभव प्रस्तुत किए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने इस अवसर पर कहा--'प्रेक्षाध्यान शिविर संपन्न होने के बाद भी संभागी प्रतिदिन कुछ समय ध्यान साधना के लिए अवश्य निकालें। साधना के लिए दीर्घकाल और निरन्तरता की आवश्यकता होती है। निष्ठा के साथ प्रयोग चलता रहे तो उसके परिणाम भी सामने आ सकते हैं। समता और निर्विचारता की साधना के द्वारा साधक स्वयं को निर्मल बनाने का प्रयास करे। परम लक्ष्य की भावना से किया जाने वाला अभ्यास श्रेयस्कर होता है।'

२७-२८ **सितम्बर को प्रेक्षा प्रशिक्षक अधिवेशन** आयोजित हुआ। इस अधिवेशन के दौरान प्रेक्षाध्यान प्रभारी मुनि कुमारश्रमणजी के निर्देशन एवं प्रेक्षा प्रशिक्षण समिति के संयोजक श्री एन.सी. जैन के संयोजकत्व में अनेक विषयों पर चिंतन और निर्णय किए गए। पूज्य आचार्यवर ने अपने पावन संबोधन में कहा--'प्रेक्षा प्रशिक्षकों की संख्या और गुणवत्ता दोनों वृद्धि को प्राप्त हों तथा वे प्रेक्षाध्यान के विभिन्न केन्द्रों पर यथासंभव अपनी पुनीत सेवाएं दें। ज्ञातव्य है सभी प्रेक्षा प्रशिक्षकों पर नियमन का दायित्व प्रेक्षा फाउण्डेशन जैन विश्वभारती के अन्तर्गत प्रेक्षा प्रशिक्षण समिति का है।'

१-२ **अक्टूबर को प्रेक्षावाहिनी का प्रथम अधिवेशन** केलवा में समायोजित हुआ। अधिवेशन के संभागियों को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'प्रेक्षावाहिनी प्रेक्षासाधकरूपी बिखरे हुए मोतियों की माला को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास है। इसके साथ जुड़े हुए साधक स्वयं तो साधना करें ही, साथ ही प्रशिक्षक के रूप में तैयार होकर दूसरों को भी प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाने और प्रेक्षाध्यान के प्रचार-प्रसार में अपनी पुनीत सेवाएं देने का प्रयत्न करें। सभी साधक अपना आध्यात्मिक विकास करते रहें। प्रेक्षावाहिनी के माध्यम से शिविरों और कार्यशालाओं के द्वारा प्रेक्षाध्यान का कार्य सतत गतिमान रहे।'

इस अधिवेशन में साधकों को महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, शासनश्री मुनि किशनलालजी, प्रेक्षा ध्यान प्रभारी मुनि कुमारश्रमणजी एवं मुनि योगेशकुमारजी ने प्रशिक्षण दिया। अधिवेशन की समायोजना में जैविभा के संयुक्त मंत्री श्री अरविन्द गोठी, प्रेक्षावाहिनी के निदेशक श्री मर्यादा कोठारी एवं श्री सुबोध पुगलिया का निष्ठापूर्ण श्रम रहा।

न्यायाधीशों, अधिवक्ताओं और विधिवेत्ताओं का सम्मेलन

परमपूज्य आचार्यवर की मंगल सन्निधि में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा आगामी २९-३० अक्टूबर को न्यायाधीशों, अधिवक्ताओं एवं विधिवेत्ताओं का द्विदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन समायोज्य है। इस सम्मेलन का मुख्य विषय है--'पारिवारिक एवं सामाजिक विवादों का सामाजिक मंच द्वारा निस्तारण।' विस्तृत जानकारी के लिए मोबाइल नं.०८१०७४५१९५१ पर संपर्क किया जा सकता है।

तेरापंथी सभाओं के लिए आवश्यक सूचना

महासभा के साथ संबद्ध सभी सभाओं को महासभा की ओर से सूचित किया जाता है कि जिन सभाओं के एफिलियेशन की ५ वर्ष की अवधि पूरी हो चुकी है, उन सभाओं का नियमानुसार ५ वर्ष के उपरान्त पुनः एफिलियेशन करवाना आवश्यक है। जिन सभाओं ने नवीनीकरण हेतु अभी तक एफिलियेशन फार्म एवं शुल्क नहीं भेजा है, उन सभाओं से निवेदन है कि यथाशीघ्र फार्म एवं शुल्क की राशि का ड्राफ्ट भिजवाने की व्यवस्था करें ताकि महासभा से आपको नया एफिलियेशन सर्टिफिकेट प्रेषित किया जा सके।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

ज्ञात हो कि नवीनीकरण हेतु जिन सभाओं के एफिलियेशन फार्म एवं शुल्क प्राप्त नहीं होंगे, उन्हें सर्टिफिकेट जारी नहीं किया जाएगा और उस सभा को केन्द्रीय मान्यता प्रदान नहीं की जाएगी। इस संदर्भ में विस्तृत जानकारी के लिए महासभा के केन्द्रीय कार्यालय--३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट कोलकाता-७०० ००१, दूरभाष : (०३३) २२३५७६५६, २२३४३५६८, फैक्स : ०३३-२२३४३६६६ से संपर्क किया जा सकता है।

क्षेत्रों के स्पर्श की घोषणा

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने दिनांक १२ अक्टूबर को घोषणा करते हुए कहा--'दिल्ली जाने से पहले-पहले छापर, चाड़वास और रतनगढ़ का तथा गंगाशहर चोखले की यात्रा के दौरान उदासर, भीनासर, देशनोक और जोरावरपुरा का स्पर्श करने का भाव है। दिनांक ६ सितम्बर को पूज्यप्रवर ने सन् २०१४ के गंगाशहर मर्यादा महोत्सव के बाद कालू और लूणकरणसर के स्पर्श की भी घोषणा की है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- स्व. श्रीमती फूलीदेवी तातेड़ एवं स्व. श्री मांगीलालजी तातेड़ (आडसर) की पुण्यस्मृति में नगराज, शुभकरण, कमलसिंह एवं प्रदीपकुमार तातेड़ द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती इच्छनीदेवी सामसुखा (धर्मपत्नी स्व.श्री मदनलालजी सामसुखा, राजगढ़) की तीसरी पुण्यतिथि (१६ अक्टूबर) पर उनके सुपुत्र दुलीचन्द, शोभाचन्द, गणेशमल, भूपेन्द्रकुमार साामसुखा, राजगढ़-कोलकाता-मदुरै-तिरुपुर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री मनोहरलालजी बड़ोला (कुआंरिया) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भगवतीदेवी, सुपुत्र देवेन्द्रकुमार, मुकेशकुमार, प्रकाशकुमार बड़ोला, बड़ोदरा (गुजरात) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्वर्गीय अमन (सुपौत्र-श्रीमती सुशीला-कैलाश दक, सुपुत्र-श्रीमती अनुपमा-मनोज दक, बरार-मैसूर) की स्मृति में श्री गोपीलाल, दीपेश, सुनील, नवीन दक द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती प्रेमलता सिसोदिया (मुम्बई) को अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'श्राविका गौरव' अलंकरण प्राप्त होने के उपलक्ष्य में डा. संपत, कपिल, रितु एवं रेहा सिसोदिया, कुर्ला-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- दलकोला (प.बं.) में संपन्न चार मासखमण तपस्याओं के उपलक्ष्य में श्री मूलचन्द जैन (अध्यक्ष-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दलकोला) द्वारा प्रदत्त।

संघ सेवा पुरस्कार और अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान की घोषणा

१० अक्टूबर। आज पूज्यवर की मंगल सन्निधि में जैविभा के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने वर्ष २०११ का संघ सेवा पुरस्कार श्री देवेन्द्रकुमार हिरण (गंगापुर) को एवं २०१० का 'अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान' अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर (पंजाब) के प्रशिक्षक श्री संजय माण्डी एवं पटना (बिहार) अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के प्रशिक्षक श्री सौरभ आचार्य को संयुक्त रूप से देने की घोषणा की।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति
पो. केलवा-३१३ ३३४, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०६६८००५५३८१, ०६३५२४०४६४१ दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ नोरतनमल दूगड़ (अध्यक्ष) फोन : ६२१४५१२३४६ बच्छराज कठोतिया (मंत्री) फोन : ६३११२३४६४१
E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**

दीर्घकालीन प्रवास के बाद जैविभा से प्रस्थान (876)

जैनविश्वभारती, लाडनूं से हमारे प्रस्थान का समय बिल्कुल सामने है। साधु-साध्वियां विहार के लिए सन्नद्ध हैं। प्रातिहारिक उपकरण पुनः गृहस्थों को संभलाए जा चुके हैं, संभलाए जा रहे हैं। यहां का प्रवास बहुत अच्छा रहा, कार्यकारी रहा। जैविभा के अधिकारियों की प्रबल भावना है कि हम एक बार परिसर में भ्रमण करें, यहां की गतिविधियों का अवलोकन करें और कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन दें। हमारी भी इच्छा हो गई कि हम विहार से पहले जैनविश्वभारती का निरीक्षण करें। इस विषय में चिन्तन किया, चिन्तन निर्णय में परिणत हुआ और हमने निर्धारित समय पर जैविभा के परिसर में परिभ्रमण करने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

27 मार्च 1997, गुरुवार। विश्वविद्यालय के कुलपति और प्रोफेसरों के लिए परिसर में कुछ विशेष भवन बने हैं। आज हमने वहां जाकर भवनों को देखा। विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति मोहनसिंहजी भंडारी और वर्तमान कुलपति भोपालचन्दजी लोढ़ा दोनों मौजूद थे। उन्होंने सारे भवन दिखलाए। लगता है कि यह एक कॉलोनी जैसी बन गई है। सुन्दर स्थल है। सामने साध्वी मालूजी (टमकोर) का समाधि-स्थल है।

यह सब देखकर हम 'आरोग्यम्' गए। यह आयुर्वेद का भवन है, सेवाभावी कल्याणकेन्द्र का भवन है। हनुमानमलजी बैंगानी (लाडनूं) की ओर से इसका निर्माण करवाया गया। आज इस भवन का उद्घाटन हुआ। हनुमानमलजी की धर्मपत्नी सूरज बहन ने फीता काटा। हमने मंगलपाठ सुनाया। विश्वभारती परिवार के प्रायः सभी लोग वहां उपस्थित थे। बाद में सब लोग 'भिक्षुविहार' में आ गए। वहां एक प्रोग्राम हो गया।

सुधर्मा सभा में आज महाश्रमणी ने प्रवचन सम्पन्न किया। जब से महाप्रज्ञजी को विहार कराया और हम यहां रहे, तब से प्रातःकालीन प्रवचन का काम महाश्रमणी कनकप्रभा को सौंपा गया। इसके पीछे चिन्तन यह रहा कि मैंने आचार्य पद का विसर्जन कर दिया है इसलिए अब नियमित प्रवचन नहीं करना है। साध्वीप्रमुखा का अनुरोध रहा कि प्रवचन यहां नहीं, ऋषभद्वार (तेरापंथ भवन) में हो सकता है। मैंने इस अनुरोध को अस्वीकार करते हुए कहा 'प्रवचन यहीं करना है।' साध्वीप्रमुखा ने मेरे आदेश को शिरोधार्य किया और प्रवचन किया। मुझे प्रसन्नता है कि इन्होंने बहुत अच्छी तरह प्रभावपूर्ण तरीके से प्रवचन किया। श्रोता मंत्रमुग्ध थे। हमको याद नहीं करते, यही सफलता की सूचना है। पट्ट पर विराजमान होकर प्रवचन करने का यह पहला ही अवसर होगा। इन्होंने बहुत अच्छे ढंग से दायित्व का निर्वाह किया। आगे यात्रा में भी प्रवचन का यही क्रम रहेगा। साध्वी स्वर्णरेखा भी तीन महीनों से बराबर उपदेश दे रही है। यह अच्छा क्रम बन गया।

28 मार्च, शुक्रवार। आज प्रातःकाल हम जैनविश्वभारती में घूमे, साधन के साथ घूमे। मौसम बहुत ठंडा था। आनन्द से गमनयोग किया। परिसर बड़ा हृदयहारी/मनोहारी लग रहा है। यहां का वातावरण शान्त है। इस बार यहां हमारा सर्वाधिक लम्बा प्रवास रहा। सायंकाल विहार कर लाडनूं शहर में जाना है। रात्रिकालीन प्रवास तेरापंथ भवन में करना है।

आज प्रवचन के समय 'मगल भावना' का कार्यक्रम रखा गया। हम सपरिवार सुधर्मा सभा में उपस्थित हुए। वृद्ध साध्वियों ने गीत गाया। समणीवृन्द, मुमुक्षु बहनों और कन्यामंडल की प्रस्तुतियां हुईं। अनेक भाई-बहनों के विचार सुने। विश्वविद्यालय के पूर्व और वर्तमान दोनों कुलपति बोले। नए कुलपति लोढाजी ने कहा 'मुझ पर नया दायित्व आया है। इसलिए अभी मुझे आपकी यहां अत्यधिक आवश्यकता है। आप मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। मैं स्वयं वैसा मनुष्य बनूं और टीम स्प्रिट से काम करूं, ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें।'

आगमवाणी से प्रवचन का प्रारंभ करते हुए मैंने कहा 'जागरवेरोवरए वीरे वीर कौन होता है? जो सदा जागरूक रहता है, अपने करणीय को भूलता नहीं है तथा वैर भाव से उपरत होता है, वह वीर है। अपेक्षा है कि हम सब वीर बनने का प्रयत्न करें।'

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा 'आज प्रातः मैंने जैनविश्वभारती का भ्रमण किया। चारों ओर देखा। विश्वभारती सदा मेरी स्मृति में रहेगी, चाहे मैं कहीं भी रहूं। यू.जी.सी. की टीम आई थी। टीम के प्रतिनिधियों को यहां का वातावरण बहुत अच्छा लगा। लाडनूं क्षेत्र महाविदेह की तरह है। यहां कभी विरहकाल नहीं रहता है। हमारे साधु-साध्वियां, समणियां और मुमुक्षु बहनें यहां रहती हैं। मैं चाहता हूं कि ये सब चिन्तनपूर्वक ठोस कार्य करें। कम-से-कम एक सौ युवतियां 'तेरापंथ-प्रबोध' और 'श्रावक-सम्बोध' कंठस्थ करें। इनका भावपूर्ण

संगान करें। दोनों ग्रन्थों को अच्छी तरह समझकर औरों को भी समझाने का प्रयत्न करें। दूसरी बात अणुव्रत का कार्य श्लथ नहीं होना चाहिए। सब कार्यकर्ता पूरी निष्ठा से इस काम को करें। तीसरी बात लाडनूं को मेरी जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। इसलिए यह क्षेत्र मद्य और आमिष से मुक्त बने। डंडे के बल पर नहीं जोर-दबाव से नहीं, किन्तु अहिंसा व मानवीय दृष्टि से यह काम हो। निराशा की जरूरत नहीं है। हम सब मिलकर प्रयत्न करें।'

प्रवचन के उपसंहार में मैंने कहा 'परसों मैं सचिवालय गया। वहां नियमित रूप से प्रार्थना का क्रम अच्छे रूप में चल रहा है। कर्मचारी से लेकर अधिकारी तक यथासंभव उपस्थित होते हैं। यह बहुत अच्छा क्रम है। इस बार विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों के साथ हमारा निकट का सम्पर्क रहा। प्रतिदिन लगभग दो घंटे उनके साथ बिताए। यहां के कर्मचारियों और कार्यकर्ताओं से भी कहना चाहूंगा कि वे सब व्यसनमुक्त बनें। मैं दूर बैठा भी कभी नहीं सुनना चाहता कि विश्वभारती में ऐसा काम हो रहा है। लाडनूं के लोगों ने अच्छे ढंग से अपना दायित्व संभाला। यहां हमारी वृद्ध साध्वियां रहती हैं। वे सब भली-चंगी हैं, अच्छी हैं। सब समाधिमय और निश्चिन्तता का जीवन जी रही हैं, यह प्रसन्नता की बात है। अब इस प्रसन्नमाला में मैं सबसे खमतखामणा करता हूं। सब सजगता से अपने दायित्व का निर्वहन करें, यही मेरी मंगलकामना है।'

आज साध्वी यशोधराजी हैदराबाद से चलकर लाडनूं पहुंची हैं। ठीक सात वर्ष पूरे करके आई हैं। योगक्षेम वर्ष की सम्पन्नता के बाद कई सिंघाड़ों ने सुदूर यात्रा के लिए प्रस्थान किया था। उनमें से प्रायः सिंघाड़े लौट आए हैं। एक मात्र साध्वी राजीमतीजी के सिंघाड़े को अभी यह अवसर उपलब्ध नहीं हो पाया है। इस बार सुदूर प्रदेशों की यात्रा सम्पन्न कर दो सिंघाड़े आए। साध्वी जतनकुमारीजी (कनिष्ठा) ने पूना चातुर्मास कर हेम दीक्षा द्विशताब्दी के मौके पर दर्शन कर लिए। साध्वी यशोधराजी को आज यह अवसर मिल गया। अच्छा उत्साह दिखाई दे रहा है। ऊपर से मेघाच्छन्न आकाश भी नई छटा दिखा रहा है।

आज लम्बे समय के बाद हमारे लिए नया दिवस आया है। अब हम यहां से विहार कर रहे हैं। मेरा स्वास्थ्य जैसा भी है, ठीक है। उतार-चढ़ाव तो आता ही रहा है, आता रहेगा। पर मेरा मन अब भी वैसा ही प्रसन्न है, जैसा रहता है।

1. इस बार यहां लाडनूं में हम नए सन्दर्भ में रहे। महाप्रज्ञजी का नए तरीके से रहना हुआ। शासन की बड़ी प्रभावना रही।
2. मेरा यह कदम अब सबकी समझ में आ गया। अच्छा हुआ, अच्छे के लिए हुआ।
3. लाडनूं विश्वभारती संस्थान फलेगा-फूलेगा। जब हम अगली बार आएंगे तो बहुत अच्छे रूप में देखेंगे।

सायंकाल छह बजे हमने जैनविश्वभारती से विहार किया। चौथी पट्टी के गेट से चलकर पहली पट्टी में स्थित तेरापंथ भवन (ऋषभद्वार) में पहुंचे। आसपास के सारे रास्ते जनाकीर्ण हो गए। जैनविश्वभारती की स्थापना से पहले लाडनूं में हमारा प्रवास प्रायः मूल ठिकाने (सेवाकेन्द्र) में होता था। उस समय पहली पट्टी में जैसी चहलपहल रहती थी, कुछ-कुछ वैसा ही दृश्य उपस्थित हो गया। अर्हत्-वन्दना के बाद शहर के लोगों को विशेष रूप से उपासना का अवसर मिला। रात्रि में आंधी-पानी ने अपना रूप दिखाया। सुबह तक मौसम साफ हो गया। विहार में व्यवधान नहीं हुआ।

29 मार्च, शनिवार। प्रातः सूर्योदय के बाद कुछ क्षणों के लिए सेवाकेन्द्र की साध्वियों को उपासना का अवसर देकर हमने उनसे विदा ली और जसवन्तगढ़ के लिए विहार कर दिया। लाडनूं की सीमा पार करते ही एक छोटा-सा गांव है आसोटा। अणुव्रत गांव के रूप में स्वीकृत आसोटा गांव के लोग सामूहिक रूप में खड़े हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। थोड़ी देर हम वहां ठहरे। गांव में चल रहे अणुव्रत कार्य की जानकारी प्राप्त की। लोगों को अणुव्रत के सन्दर्भ में कुछ बातें बताईं। वहां से आगे चले। एक और छोटे-से गांव पदमपुरा के लोग खड़े थे। गांववासियों की भावना देखकर वहां भी प्रवचन किया, नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी।

मार्गवर्ती गांवों के लोगों को धर्मोपदेश सुनाकर आगे बढ़े, जसवन्तगढ़ में प्रवेश किया, वहां सेवाभावी कल्याणकेन्द्र में सेवा देनेवाले वैद्य तिलोकचन्दजी शर्मा का मकान था। वैद्यजी के भावपूर्ण अनुरोध पर उनके मकान में गए। कुछ समय वहां रुके। वैद्यजी के परिजनों और आसपास रहनेवाले लोगों की सभा जुड़ गई। उपस्थित लोगों को नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा दी।

जसवन्तगढ़ में हमारा प्रवास बगड़िया धर्मशाला में हुआ। हम धर्मशाला में पहुंचे, तब तक दस बज चुके थे। लाडनूं और सुजानगढ़ के लोग तो वहां उपस्थित थे ही, चाड़वास, छापर और बीदासर के लोग भी बड़ी संख्या में आ गए। हजारों लोगों के सम्मिलन से गांव में मेला-सा लग गया। स्थानीय लोग भी बहुत प्रसन्न थे। दिनभर सत्संग चलता रहा। स्थानीय और आगन्तुक सभी लोग लाभान्वित हुए।

30 मार्च, रविवार। आज हम सुजानगढ़ पहुंचे। सुजानगढ़ और लाडनूं दोनों क्षेत्रों के लोग उपस्थित थे। स्वागत का कार्यक्रम चला। श्रीचन्दजी रामपुरिया आदि कई व्यक्ति बोले। स्वागत के उत्तर में मैंने कहा 'जैनविश्वभारती, लाडनूं में दो वर्ष प्रवास करके आज मैं सुजानगढ़ आया हूं। लाडनूं में इतना लम्बा प्रवास किया, पर जयाचार्य से कम रहा हूं। एकान्त और स्वास्थ्य की अनुकूलता के साथ वहां साधना और ज्ञानाराधना का भी अच्छा क्रम चला। मैं श्रावक-श्राविकाओं से भी कहना चाहता हूं कि वे ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र के महत्त्व को समझें तथा अपने दृष्टिकोण को यथार्थ व व्यापक बनाएं। जैन विद्वान अच्छी संख्या में तैयार हों, यह आज की सबसे बड़ी अपेक्षा है। श्रावक-सम्बोध श्रावकाचार का एक अच्छा ग्रन्थ है। इसे कंठस्थ करने का प्रयत्न किया जाए।'

सुजानगढ़ में हम तीन दिन रहे। 1 अप्रैल को मौन दिवस था। पिछले डेढ़ वर्ष से 1 और 16 तारीख को दिन-रात मौन रहता है। मौन के दिन लगभग समय ध्यान, स्वाध्याय और कायोत्सर्ग में बीतता है। सुबह-सुबह दर्शन करने के बाद लोगों को उपासना का अवसर भी नहीं मिलता। यह प्रयोग प्रायः ठीक चल रहा है। कभी कोई विशेष कठिनाई नहीं आई। पर सुजानगढ़-प्रवास में बाहर से लोगों के अधिक आवागमन तथा वहां प्रवासी सन्तों की भावना देखकर थोड़ी-सी दुविधा का अनुभव हुआ। आखिर एक प्रसंग तो ऐसा आ गया कि संघीय दृष्टि से विशेष स्थितिवश मौन खोलना पड़ा।

सुजानगढ़ में मुनि दुलीचन्दजी 'दिनकर' स्थिरवासी हैं। वय अठासी वर्ष है। वय में सबसे बड़े हैं। विनीत हैं। भक्त हैं। एकरंग हैं। समर्पित हैं। इनके पास बाल-बंधव मुनि पान सेवाभावी साधु है। दिनकरजी के लिए आलम्बनभूत है। यहां और भी कई साधु हैं। मुनि दिनकरजी स्वाध्याय खूब करते हैं। संगीत के बड़े प्रेमी हैं। तुलसी-पाठशाला के प्रथम छात्रों में हैं।

मुनि दिनकरजी ने अपनी भावना प्रस्तुत करते हुए कहा 'गुरुदेव! मैं सतरह वर्ष की अवस्था में संघ में आया था। आज अठासीवां वर्ष चल रहा है। इस सुदीर्घ संयम यात्रा में जिस समाधि और आनन्द का अनुभव हुआ और हो रहा है, वह सब आपके प्रताप से है। आपकी कृपादृष्टि मुझ पर सदा रही है। समय-समय आपने अपनी सेवा का दुर्लभ अवसर प्रदान कर मुझे कृतार्थ किया है। मैं किन शब्दों में आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करूं? गुरुदेव! आप मुझे ऐसी ही समाधि प्रदान करते रहें। आप चिरायु हों, दीर्घायु हों, मेरी यही मंगलकामना है।'

2 अप्रैल, बुधवार। आज सुजानगढ़ से प्रस्थान कर हम 'कोठारी कुंज' पहुंचे। वहां लाडनूं, सुजानगढ़, छापर, चाड़वास, बीदासर, राजलदेसर, श्रीडूंगरगढ़ आदि क्षेत्रों के इतने लोग आ गए कि 'कोठारी कुंज' छोटा हो गया। इस समय प्राइवेट बसों की हड़ताल चल रही है। पर श्रद्धा और उत्साह के सामने इस बाधा का कोई असर दिखाई नहीं दिया।

'कोठारी कुंज' पहुंचने के कुछ ही समय बाद मैंने देखा कि लोग इधर-उधर घूम रहे हैं। यों ही समय जाया करना मुझे पसन्द नहीं आया। मैंने साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं की समवेत सभा आमंत्रित की। सभा के व्यवस्थित होने पर श्रावक समाज को सम्बोधित कर मैंने कहा 'उपासना के इन दुर्लभ क्षणों को पिकनिक का रूप न दिया जाए। मैं चाहता हूं कि ज्ञान, ध्यान, जप व स्वाध्याय में से किसी एक का आलम्बन लेकर समय को सार्थक किया जाए। अभी हमारे पास समय है। इस समय का उपयोग करने के लिए तेरापंथ-प्रबोध का लयबद्ध संगान हो। इससे प्रेरणा तो मिलेगी ही, एकाग्रता भी बनी रहेगी।'

समझदार को इशारा काफी इस कहावत के अनुसार कुछ ही क्षणों में तेरापंथ-प्रबोध का संगान शुरू हो गया। इस उपक्रम में साधु-साध्वियों, समणियों और श्रावक-श्राविकाओं की सामूहिक संभागिता रही। पर संगान की प्रक्रिया को आकर्षक और व्यवस्थित बनाने के लिए एक बार एक पद्य के उच्चारण का प्रारंभ साधुओं की ओर से किया गया और एक बार साध्वियों ने किया। लगभग एक घंटे तक तन्मयता के साथ सबने संगान किया। सबको अच्छा लगा।

3 अप्रैल, गुरुवार। आज हम छापर पहुंचे। 'कालू कल्याण केन्द्र' में प्रवास हुआ। उत्साहपूर्ण वातावरण में कार्यक्रम चला। छापर की वयोवृद्ध महिलाओं ने वहां हमारे चातुर्मास के लिए प्रार्थना की। मैंने अपने प्रवचन में कहा 'अष्टमाचार्य पूज्य गुरुदेव कालूगणी की जन्मभूमि में हम दो दिन के लिए आए हैं। इतने कम समय के लिए आना हमें भी कैसा-कैसा ही लग रहा है। पर इस बार का सारा कार्यक्रम पूर्व निर्णीत है। इसलिए जिसे जितना समय मिल रहा है, उसी का भरपूर उपयोग किया जाए। हमारे पास अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवनविज्ञान जैसे व्यापक और असाम्प्रदायिक कार्यक्रम हैं। चिन्ता का विषय एक ही है कि मनुष्यता को सुरक्षित रखने का सघन प्रयास नहीं हो रहा है।'

छापर में जयपुर से डॉक्टर पोकरणा आए। उदर विशेषज्ञ हैं। इधर में कोष्ठबद्धता की कठिनाई बनी हुई है। डॉक्टर ने जांच की। चिकित्सा बताई। प्रारंभ कर दी गई। डॉक्टर अच्छे हैं, अनुभवी हैं, तेरापंथी हैं। अभी अनोप बोथरा ने यहां आने की प्रेरणा की।

4 अप्रैल, शुक्रवार। मध्यान्ह का समय। श्रावक समाज को उपासना कराने का समय। साधु-साध्वियों को उपस्थित होने का निर्देश दिया। चतुर्विध धर्मसंघ की उपस्थिति में मैंने श्रावक-सम्बोध का संगान शुरू किया। कुछ पद्यों की प्रस्तुति के बाद मैंने महाश्रमणी से कहा कि वह इन पद्यों की संक्षिप्त व्याख्या करे। उसने संकोच का अनुभव किया। पर आदेश का पालन तो होना ही था। बीच-बीच में मैं भी कुछ स्पष्टीकरण करता रहा। लगभग एक घंटे से अधिक समय तक यह क्रम चला। समय इतना जल्दी बीत गया कि पता ही नहीं चला। मैंने बार-बार संगान किया। श्रोताओं ने भावविभोर होकर सुना और समवेत स्वरों में गाने का अभ्यास भी किया।

श्रावक-सम्बोध सीखने की प्रेरणा देते हुए मैंने कहा 'श्रावक-सम्बोध बनाने की प्रेरिका महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा रही है। इन्होंने एक बार कहा 'आपने साधु-साध्वियों के लिए अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया है। किन्तु श्रावक समाज के लिए इस दृष्टि से सलक्ष्य अभी तक कोई ग्रन्थ सामने नहीं आया है।' महाश्रमणीजी का सुझाव हमें पसन्द आया और प्रयत्न प्रारंभ कर दिया। फलस्वरूप श्रावक-सम्बोध कृति सामने आ गई। श्रावक इस कृति को सामने रखकर तदनुरूप बनने का प्रयास करें तो सही मायने में श्रावक बन जाएंगे। वर्तमान युग की त्रासदी यह है कि आदमी को बदलने का प्रयास दंड और कानून के जरिये किये जा रहा है। ऐसे प्रस्ताव पास करनेवाले अधिकारी स्वयं अपराधी बन रहे हैं। यह स्थिति देश के लिए हितकर नहीं है। हम अणुव्रत के माध्यम से अपराध चेतना को मिटाना चाहते हैं। मेरा विश्वास है कि समय, श्रम और शक्ति का सही दिशा में नियोजन होता रहे तो व्यक्ति-व्यक्ति के मानस को बदला जा सकता है।

5 अप्रैल, शनिवार। आज हम छापर से चलकर चाड़वास पहुंचे। जहां अभी-अभी मर्यादा महोत्सव हुआ था। बड़ा रमणीय स्थल बन गया है। गेस्ट हाउस के ऊपर भी मकान बन गया है। हमने ऊपर चढ़कर देखा। बहुत भव्य रूप लगा। चाड़वास में दो दिन रहना है। स्वागत समारोह में श्रावक-श्राविकाओं के मीठे-मीठे उपालम्भ सुने। क्योंकि महोत्सव पर हम यहां नहीं आए थे। महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ, इसकी लोगों को प्रसन्नता भी है। चाड़वास में स्थिरवासी मुनि जंवरीमलजी बोले। महोत्सव के अवसर हमने जो सन्देश दिए थे, उनको प्रिंट करवा कर अच्छी फ्रेमिंग कर दी गई। फ्रेम किए गए दोनों सन्देश भेंट किए गए।

मैंने अपने प्रवचन में कहा 'चाड़वास अब सचमुच चारूवास बन गया है। यहां मर्यादा महोत्सव जैसा व्यापक कार्यक्रम होने से इसकी गणना शहरों की पंक्ति में होने लगी है। यहां के लोगों ने महोत्सव को सफल बनाने में अपनी सूझबूझ और कर्तृत्व का भरपूर उपयोग किया। पहले यह विश्वास नहीं था कि चाड़वास के लोग इस तरह की सुव्यवस्थाएं इतने कौशल से कर पाएंगे। अब इनका मुकाबला भारी पड़ेगा, ऐसा प्रतीत होता है। कुल मिलाकर चाड़वास का मर्यादा महोत्सव सफल महोत्सव रहा।'

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा 'जिस समय मर्यादा महोत्सव की घोषणा हुई थी, यहां के लोगों को कल्पना नहीं थी कि मैं नहीं आऊंगा। हमने न आने का निर्णय कर लिया। चाड़वासवासियों को यह निर्णय कैसा-कैसा ही लगा, हमारे साधु-साध्वियों को भी लगा। पर हमारा निर्णय सुचिन्तित था। हमने इसे रहस्य ही बनाए रखा। साधु-साध्वियों ने भी इस सन्दर्भ में जानने की चेष्टा की। पर मैंने कहा इसे रहस्य ही रहने दो। कभी रहस्य खुल जाएगा।' भाइयों! मैं यहां आ जाता तो ये कीमती सन्देश आपको कैसे मिलते। ये सन्देश आपके लिए अमूल्य निधि बन गए हैं। आपने भी इन्हें सुन्दर ढंग से प्रकाशित कर ऐतिहासिकता